ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 3 अंक : 5 जून-जुलाई 2013 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

शनिदेव पर तेल चढ़ाने की परंपरा क्यों?	डा. महेश पारासर	2
वास्तुदोष हो सकता है आपकी बीमारी का कारण	डा. रचना के भारद्वाज	4
निडर होते है वृश्चिक लग्न के जातक	डा. शोनू मेहरोत्रा	5
वृहस्पति का मिथुन में प्रवेश	श्रीमती कविता अगरवाल	6
कजली तीज व्रत व पर्व	प. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी	7
गंगा दशहरा	श्री पवन कुमार मेहरोत्रा	8
सिन्दूर के चामत्कारिक टोटके	पं. अजय दत्ता	9
देवता	कार्ष्णि रमाकान्त शर्मा	10
सफलता प्राप्ति की युक्ति.....	श्री सुरेश अग्रवाल	11
ज्योतिष –विद्या या मिथ्या	श्रीमती रेखा जैन	12
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	13–14
सांवली सूरत होना अच्छे हृदय की निशानी	मोनिका गुप्ता	15
कर्ज मुक्ति का मंत्रा	पं. दिलीप उपाध्याय	15
मुख का मीठा–मन का कड़वा	विजय शर्मा	16
पूजा – सामिग्री		20

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। **RNI No. UPHIN/2010/44791**

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

शनिदेव पर तेल चढ़ाने की परंपरा क्यों?

शनिदेव दक्ष प्रजापति की पुत्री संज्ञादेवी और सूर्यदेव के पुत्र हैं। यह नवग्रहों में सबसे अधिक भयभीत करने वाला ग्रह है। इसका प्रभाव एक राशि पर ढाई वर्ष और साढे साती के रुप में लंबी अवधि तक भोगना पड़ता है। शनिदेव की गति अन्य सभी ग्रहों से मंद होने का कारण इनका लंगड़ाकर चलना है। वे लंगड़ाकर क्यों चलते हैं, इसके संबंध में सूर्यतंत्र मं एक कथा है– एक बार सूर्यदेव का तेज सहन न कर पाने की वजह से संज्ञादेवी ने अपने शरीर से अपने जैसी ही एक प्रतिमूर्ति तैयार की और उसका नाम स्वर्णा रखा। उसे आज्ञा दी कि तुम मेरी अनुपस्थिति में मेरी सारी संतानों की देखरेख करते हुए सूर्यदेव की सेवा करो और पत्नी सुख भोगो। आदेश देकर वह अपने पिता के घर चली गई। स्वर्णा ने भी अपने आपको इस तरह ढाला कि सूर्यदेव भी वह रहस्य न जान सकें। इस बीच सूर्यदेव से स्वर्णा को पांच पुत्र और दो पुत्रियां हुई स्वर्णा अपने बच्चों पर अधिक और संज्ञा की संतानों पर कम ध्यान देने लगी।

एक दिन संज्ञा के पुत्र शनि को तेज भूख लगी, तो उसने स्वर्णा से भोजन माँगा। तब स्वर्णा ने कहा कि अभी उठो, पहले मैं भगवान् का भोग लगा लूं और तुम्हारे छोटे भाई बहनों को खिला दूं, फिर तुम्हें भोजन दूंगी। यह सुनकर शनि को क्रोध आ गया और उन्होनें माता को मारने के लिए अपना पैर उठाया, तो स्वर्णा ने शनि को शाप दिया कि तेरा पांव अभी टूट जाए। माता का शाप सुनकर शनिदेव डरकर अपने पिता के पास गए और सारा किस्सा कह सुनाया। सूर्यदेव तुरंत समझ गए कि कोई भी माता अपने पुत्र को इस तरह का शाप नहीं दे सकती। इसलिए उनके साथ उनकी पत्नी नहीं, कोई अन्य है।

सूर्यदेव ने क्रोध में आकर पूछा कि 'बताओं तुम कौन हो?' सूर्य का तेज देखकर स्वर्णा घबरा गई और सारी सच्चाई उन्हें बता दी। तब सूर्यदेव ने शनि को समझाया कि स्वर्णा तुम्हारी माता नहीं है, लेकिन मां समान है। इसलिए उनका दिया शाप व्यर्थ तो नहीं होगा, परंतु यह इतना कठोर नहीं होगा कि टांग पूरी तरह से अलग हो जाए।हां, तुम आजीवन पांव से लंगडाकर चलते रहोंगे। तभी से शनिदेव लंगड़े हैं।

शनिदेव पर तेल क्यों चढ़ाया जाता है, इस संबंध में आनंदरामायण में एक कथा का उल्लेख मिलता है। जब भगवान राम की सेना ने सागरसेतु बांध लिया, तब राक्षस इसे हानि न पहुंचा सके। उसके लिए पवनसुत हनुमान को उसकी देखभाल की पूरी जिम्मेदारी सौंपी गई। जब हनुमान जी शाम के समय अपने इष्टदेव राम के ध्यान में मग्न थे, तभी सूर्यपुत्र शनि ने अपना काला कुरुप चेहरा बनाकर क्रोधपूर्वक कहा–'हे वानर्! मैं देवताओं में शक्तिशाली शनि हूं। सुना है, तुम बहुत बलशाली हो। आंखे खोलों और मुझसे युद्ध करो, मैं तुमसे युद्ध करना चाहता हूं।' इस पर हुनमान ने विनम्रतापूर्वक कहा–'इस समय मैं अपने प्रभु का ध्यान कर रहा हूं। आप मेरी पूजा में विघ्न मत डालिए। आप मेरे आदरणीय हैं, कृपा करके यहां से चले जाइएं। जब शनि लड़ने पर ही उतर आए तो हनुमान ने शनि को अपनी पूंछ में लपेटना शुरु कर दिया। फिर उसे कसना प्रारंभ कर दिया। जोर लगाने पर भी शनि उस बंधन से मुक्त न होकर पीड़ा से व्याकुल होने लगे। हनुमान जी ने फिर सेतु की परिक्रमा शुरु कर शनि के घमंड को तोड़ने के लिए पत्थरों पर पूंछ को झटका दे दे कर पटकना शुरु कर दिया। इससे शनि का शरीर लहुलुहान हो गया, जिससे उनकी पीड़ा बढ़ती गई। तब शनिदेव ने हनुमान जी से प्रार्थना की कि मुझे बंधनमुक्त कर दीजिए। मैं अपने अपराध की सजा पा चुका हूं। फिर मुझसे ऐसी गलती नहीं होगी।

इस पर हनुमानजी बोले–'मैं तुम्हे तभी छोडूंगा, जब तुम मुझे बचन दोगे कि श्रीराम के भक्तों को कभी परेशान नहीं करोगें। यदि तुमने ऐसा किया, तो मैं तुम्हें कठोर दंड दूंगा। 'शनि ने गिड़गिड़ाकर कहा–'मैं बचन देता हूं कि कभी भूलकर भी आपके और श्रीराम के भक्तों की राशि पर नहीं आऊंगा। आप मुझे छोड़ दें।' तब हनुमान ने शनिदेव को छोड़ दिया। फिर हनुमान जी से शनिदेव ने अपने घावों की पीड़ा मिटाने के लिए तेल मांगा। हनुमान ने जो तेल दिया, उसे घाव पर लगाते ही शनिदेव की पीड़ा मिट गई। उसी दिन से शनिदेव को तेल चढ़ता है, उससे उनकी पीड़ा शांत हो जाती है और वे प्रसन्न हो जाते हैं।

महेश पारासर

हमारे यहा रत्नों को लेब से टेस्टिड **(Lab Certified)** कराकर उपलब्ध करायें जाते हैं। रत्नों की **100%** शुद्धता के लिये रत्न के साथ उसकी शुद्धता का सर्टीफीकेट दिया जाता हैं।

अमृत वचन

सुविधा शरीर को होती है, सुख मन को होता है किन्तु आनन्द आत्मा को होता है। धन से शरीर को सुख मिलता है, तृप्ति मन को होती है, आत्मा में दोनों की उपेक्षा होती है।

पाठकों के पत्र

परम् श्रद्धेदय पारासर जी,

मैं आपकी पत्रिका का विगत 3 सालो से पठन कर रहा हूँ। पत्रिका के माध्यम से ज्योतिष व वास्तु की पूर्ण जानकारी हासिल हो रही है।

मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि पत्रिका में ज्ञान वर्धक लेख प्रकाशित करते रहें जिससे समाज का भला होता रहें।

सधन्यवाद

श्री माधव अग्रवाल, आगरा।

आदरणीय पारासर जी,

भविष्य निर्णय का अप्रैल–मई अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका बहुत ही रुचिकर और सार गर्भित लगी। सम्पादकीय बहुत ही अच्छा लगा। सभी लेख अच्छे व ज्ञान वर्द्धक करने वाले थे आपको सादर चरण स्पर्श

सीता राम गुप्ता, आगरा।

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न1. क्या मेरा रूका हुआ धन प्राप्त होगा? उपाय बतायें

अजय आर्य, आगरा।

उत्तर– आपकी कुण्डली के अनुसार अगस्त 2013 के बाद आपका रूका हुआ धन प्राप्त हो जायेगा। उपाय स्वरूप पक्षीयों को दाना चुगाते रहें।

प्रश्न2. मेरा पति से तलाक का केस कब तक खत्म होगा?

जानकी वाधवानी, नई दिल्ली।

उत्तर–सप्तमेश नीच का होकर अस्त है। सप्तम भाव पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि भी है। राहु–केतु की शान्ति करवायें। शनि की पूजा करें। मंगल त्रिकोण यंत्र व कात्यायनी यंत्र की पूजा करें। आपका 2014 में तलाक हो जायेगा।

डा.महेश पारासर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या– 1. अपने मकान का नक्शा भेज रहा हूँ घर में सभी मानसिक तनाव में रहते है। उपाय बतायें।

अनिल सारस्वत, दिल्ली

समस्या– आपके घर में उत्तर–पूर्व दिशा में शौचालय बना हुआ हैं। जिसकी बजह से मानसिक तनाव लम्बी गम्भीर बीमारी व व्यय की स्थिति बनी रहेगी। इसे वहाँ से हटा कर पश्चिम या पश्चिम मध्य में ले जाये। तुरन्त आराम मिलेाग।

समस्या– 2. मेरा पत्नी से वैचारिक मतभेद रहता है व हम दोनों ही तनाव गस्त रहते है। मार्ग दर्शन करें। घर का नक्शा संलग्न है। संदीप तैलंग, फरीदाबाद

समस्या– आपके घर में उत्तर मध्य में रसोई घर स्थित है। जो आप दोनों के मध्य वैचारिक मतभेद पैदा कर रहा है। खाना वैचारिक मतभेद पैदा कर रहा है। खाना बनाते समय मुँह पश्चिम दिशा की ओर होता है। आग और पानी पास–पास है। जिस वजह से वैचारिक मतभेद व तनाव बना रहता है। रसोई को पूर्व–दक्षिण या दक्षिण मध्य में स्थानान्तरित करे। अवश्य ही आराम मिलेगा। खाना बनाते समय मुँह की ओर रखे।

पं. अजय दत्ता

मो. 9319221203

वास्तुदोष हो सकता है आपकी बीमारी का कारण

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली

जो व्यक्ति विधिवत् वास्तुपूजा करते है, वे आरोग्य, पुत्र, धन धान्यादि का लाभ प्राप्त करते हैं। सम्यक् वास्तु के अभाव में भवन निवासी को पत्नी की अकाल मृत्यु, पुत्र–पुत्रादि का नाश, मानसिक अशांति, रोग बेचैनी एवं विभिन्न प्रकार के उपद्रव सहने पड़ते हैं।

भूखण्ड का आकार उस पर भवन निर्माण कराकर रहने वाले को पूर्णरुपेण प्रभावित करता है भूखण्ड के आकार में वास्तुदोष होने पर वह निम्नलिखित प्रकार से बीमारी का करण बनता है।

1. दण्डाकार भूखण्ड पर भवन न बनवाएँ, इस पर बने घर में निवास करने से स्वास्थ्य धीरे–धीरे बिगड़ने लगता है और वहाँ के निवासी दीर्घकालिक रोगों से ग्रस्त हो जाते हैं।

2. डमरु आकार स्थल पर निर्मित भवन गृह निवासियों को नेत्र व्याधि से ग्रस्त करता है और अन्धत्व की ओर अग्रसर करते हुए अल्पायु में ही मृत्यु कराता है।

3. कुंभाकार स्थल पर निर्मित मकान गृहस्वामी एवं उसके परिवार के सदस्यों को चर्मरोग एवं कोढ़ से पीड़ित रखता हैं।

4. पूर्व, आग्नेय, ईशान कोण में ऊँची तथा पश्चिम में नीची भूमि दैत्यपृष्ठ तथा पूर्व–पश्चिम में लम्बी तथा उत्तर–दक्षिण में ऊँची बीच में नीची भूमि नागपृष्ठ कहलाती है। इन दोनों प्रकार के भूखण्डों पर निर्मित भवन–निवासी स्त्री, पुत्र आदि सदैव बीमार रहते हैं और मृत्यु भय से आशंकित रहते हैं।

5. इसी प्रकार अंडाकार, मूसलाकार, स्तूपाकार, मृदंग्डकार एवं 'टी' आकार के भूखण्डों पर बनाए गए मकानों में रहकर वहाँ के निवासी सदैव रोगी बने रहते है। इस प्रकार के भूखण्डों से बीमारी, तनाव, धनहानि और दुःख के अतिरिक्त कुछ भी प्राप्त नहीं हो पाता।

जीवन में रोगमुक्त और सुखी रहने के लिए आयताकार एवं वर्गाकार भूखण्ड पर वास्तु के नियमों के अनुसार निर्मित भवन ही सही रहते हैं।

भूखण्ड की दिशाएँ भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। भूखण्ड की विभिन्न दिशाओं में यदि वास्तु के नियमों के विरुद्ध निर्माण कराया जाए अर्थात् वहाँ वास्तुदोष विद्यमान हो, तो वहाँ के निवासियों की बीमारी कार कारण बन सकता है। विभिन्न दिशाओं में उपस्थित वास्तुदोष किस प्रकार और कौन–सी बीमारियों का कारण बनता है, निम्नलिखित बिन्दुओं में देखिएः

1. पूर्व पैतृक स्थान है, निर्माण कराते समय भवन के पूर्व में खाली स्थान रखना आवश्यक है, पूर्व दिशा भवन के स्वामी को प्रभावित करती है, यदि पूर्व को पूरी तरह से बन्द करके पश्चिम को खुला छोड़ दिया जाता है, तो उस भवन के स्वामी की जीवन हानि होने की संभावना रहती है।

2. उत्तर दिशा मातृ स्थान है। भवन निर्माण कराते समय उत्तर में दक्षिण की अपेक्षा अधिक स्थान छोडना आवश्यक है। यदि भवन का ईशान कटा हुआ हो और उत्तर में रिक्त स्थल में छोड़ा जाए, तो मातृपक्ष के निरंतर अस्वस्थ रहने एवं अकाल मृत्यु होने की संभावना रहती है।

3. ईशान की मर्यादा बनाए, रखना सर्वाधिक जरुरी है। इसमें किसी प्रकार का कटाव (भूखण्ड या निर्माण दोनों में), अस्वच्छता, अग्नितापा, टायलेट्स, कूड़ा–कचरा अथवा सीढ़ियों का निर्माण, ईशान भाग का कमान के अन्य भागों से ऊँचा होना, अनेक प्रकार से दुष्प्रभाव डालता है, जो वंश अवरुद्धि से लेकर दीर्घकालीन व्याधि तक हो सकते हैं। अक्सर इस प्रकार के मकान में पुत्र मंदबुद्धि होते हैं।

4. यदि घर का उत्तर–पश्चिम (उत्तरी वायव्य) भाग घर के दक्षिण–पूर्व (दक्षिण–आग्नेय) से ऊँचा है, तो उस मकान के निवासी कब्ज, उदर विकार, तिल्ली–विकार, आँत विकार, जैसे रोगों से परेशान रहते हैं।

5. जिन मकानों के भूखण्डों के दक्षिणी आग्नेय में बढाव होता है, वहाँ के पुरुषों का स्वास्थ्य भयंकर रुप से खराब रहता है।

6. मकान के पूर्व में तनिक भी खाली स्थान न छोडते हुए उसे उस ओर से ऊँचा बनाकर पश्चिम की ओर के बरामदे को ढलाऊ बनाते हुए निर्माएा करा लिया जाए तो उस मकान के निवासी नेत्र रोग एवं लकवा के शिकार हो जाते हैं।

7. भवन में दक्षिणी नैऋत्य में वीथीशूला आती हो, तो उस भवन की महिलाएँ उन्माद और मानसिक तनाव से ग्रस्त रहती है। यदि दक्षिण में कुँआ बना हो, तो उनकी आत्महत्या अथवा दीर्घकालिक व्याधि से अकाल मृत्यु होती है।

8. भवन में पश्चिमी नैऋत्य से वीथीशूला आती हो, तो उस भवन के निवासी पुरुष भयंकर बीमारियों से पीड़ित रहते हैं अथवा उनकी

शेष पेज 18 **पर**.....

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property
Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja
Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM
भविष्य दर्शन®
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu
East of Kailash, New Delhi - Ph. 09717195756
H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2856666

निडर होते है वृश्चिक लग्न के जातक

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता ;अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

काल पुरुष की कुंडली में वृश्चिक अष्टम भाव में पड़ती हैं। यह विशाखा के एक चरण, अनुराधा के चार चरण और ज्येष्ठा के चार चरणों से मिलकर बनती है। वृश्चिक का स्वामी मंगल होता है। यह एक स्थिर लग्न है। यह लग्न उत्तर दिशा का परिचायक है और इसका रंग भूरा होता है इस राशि में कोई भी ग्रह उच्च का नहीं होता परन्तु चन्द्रमा यहाँ अवश्य ही नीच का हो जाता है। मंगल के गुणों से पूर्ण वृश्चिक लग्न एक मात्र ऐसी लग्न है जहाँ कोई ग्रह नीच का हो सकता है लेकिन यहाँ कोई ग्रह उच्च का नहीं होता है।

वृश्चिक का अर्थ है बिच्छू। बिच्छू के गुणों की तरह वृश्चिक जातकों के अन्दर भी वहीं गुण व दोष होते है। जैसे बिच्छू किसीसे डरता नहीं है और क्रोधित होने पर अपने शत्रु को डंक मार देता है ठीक उसी तरह वृश्चिक लग्न वाला व्यक्ति किसी से डरता नहीं है, कही भी जाने से संकोच नहीं करता। कभी–कभी कुछ ज्यादा तीखा भी बोलते हैं। वृश्चिक वाला जिसका मित्र होता है, उससे बहुत प्रेम करता है। इन्हें अपनी और अपने अमित्रों की आलोचना जरा भी बर्दाश्त नहीं होती है।

वृश्चिक वाले जातक का व्यक्तित्व अति आत्म–विश्वास से भरा होता है उसके पैर सुडोल होते हैं। चेहरा कुछ चौड़ापन लिए होता है। अगर वृश्चिक लग्न वाले का नवांश वृश्चिक का हो तो जातक की लम्बाई अधिक नहीं हो पाती है। वृश्चिक वाला बहुत सर्तक होता है। यह कोई भी काम करने में अपने बचाव के साथ–साथ दूसरे पर घात भी लगाकर रखता है। बाद–विवाद में पक्ष या विपक्ष की चिन्ता नहीं करता है। यह भौतिक सुखों को भोगने की इच्छा रखने वाला होता है। मंगल ठीक ठाक हो तो इस लग्न वाले में हथियार रखने का शौक होता है। विनोद प्रिय होने के बावजूद भी विवादी प्रकृति का होता है। लेकिन झगड़ा होने पर भी अपनी हानि की चिंता नही करता है बल्कि तुरंत हिसाब–किताब बराबर कर लेना पंसद करते हैं। हालांकि अपने वक्तव्य को मनवाने के लिए तर्क वितर्क करता है। इन जातकों को क्रोध भी बहुत जल्दी आता है और अपने क्रोध को भी नियंत्रण में नही रख पाते हैं। ऐसे जातक को यदि ज्ञात भी हो कि वह जो करने जा रहा है उसमें विवाद की स्थितियां संभव है तब भी वह उस कार्य को कर डालता है। ये अपने उचित और अनुचित कार्यो को पूरा करने का अथक प्रयास करता है। ये विरोध प्रकृति के होते हैं और यहाँ तक अपने स्नेही मित्र, बंधु, कुटुंबी, पत्नी या प्रेमिका से भी कटुता पूर्णव्यवहार करने में नहीं चूकते। यह प्रतिशोध लेने में निपुण व तत्पर रहता है। दूसरों की कमियां निकालने में उस्ताद होता है। वृश्चिक लग्न वाला अन्य लग्नों पर भारी पड़ता है। वृष लग्न वाले ही इनके नैसर्गिक मित्र होते हैं वृश्चिक लग्न वाले का विवाह वृष लग्न वाले से करने से उनमें आपसी तालमेल बहुत अच्छा रहता है। इस लग्न में जन्म लेने वाली कन्याओं में पुरुषोंचित गुण ज्यादा विकसित हो जाते हैं। सूर्य, गुरु, और चन्द्रमा इन्हें मित्रवत फल देते है जबकि बुध, शुक्र और शनि इनके शत्रु होते है। इस लग्न के जातक की रहस्यात्मक विषयों, तंत्र–मंत्र में रूचि होती है।

अपने निर्णय पर दृण रहते है। यह सरलता से विचलित नही होते और बातों को बढा–चढ़ा कर पेश करते है। ग्रह स्थितियों के कारण यदि वृशिचक लग्न वाला साहित्य या पत्रकारिता के क्षेत्र में हो तो उसका लेखन में आलोचनात्मक होती है। वृश्चिक लग्न वाले जातकों के स्वामी हुनमानजी है, इसलिए इस लग्न वाले को मूंगा पहनना चाहिए। विशेष परिस्थितियों में पुखराज भी धारण कर सकते है। बुध और शुक्र चूंकि शुभ फल नही देतें है। इसलिए बहन और पत्नी का खुश रखना चाहिए।

❋❋❋

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

वृहस्पति का मिथुन में प्रवेश

डा. कविता अग्रवाल

ज्योतिष ऋषि, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद
प्रवक्ता – अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान संघ
फ्रेंचाइजी – 'लाल किताब अमृत'
जी.डी. वशिष्ठ– 'बस अब दुख और नही'

द्वादश राशियों पर उनका शुभ व अशुभ प्रभाव

वृहस्पति को ब्रहमाड़ और मनुष्य के अन्दर बाहर व्याप्त हवा कहा गया है। संतान, धन, विद्या, बुद्धि, राजकीय सम्मान आदि बातें वृहस्पति से ही प्राप्त होती है। स्त्रियों की कुंडली में वृहस्पति का शुभ होना वैवाहिक सुख का संकेत होता हैं कुंडली के 12 भावों में 5 भावो पर वृहस्पति का आधिपत्य है। इसलिये अनेक दुर्योगो को वृहस्पति

अकेला ही ध्वस्त करने की क्षमता रखता है। कालीदास रचित उत्तर कालामृत ग्रन्थ का एक प्रसिद्ध श्लोक कि कुर्वति सर्वेग्रहा यस्य केन्द्रे वृहस्पति अर्थात् सारे ग्रह मिलकर भी उस जातक का क्या बिगाड लेगे जिसके केन्द्र में वृहस्पति है। वृहस्पति सभी ग्रहों का गुरू है। यह अच्छी बुरी दोनो स्थितियों के स्वामी है।

गोचरीय भ्रमण काल में वृषभ राशि में चल रहे वृहस्पति दिनांक 31 मई 2013 शुक्रवार प्रातः 6 बजकर 50 मिनट पर अर्थात् ज्येष्ठ पक्ष की सप्तमी को वृषभ राशि से मिथुन राशि में प्रवेश कर रहे है। वृहस्पति इस राशि 12 माह 15 दिन यानि 19 जून 2014 तक रहेगें। जब वृहस्पति मिथुन राशि में आता है, तब चारों तरफ अव्यवस्था फैल जाती है। अप्रत्याशित घटनाँए होती है। छल, प्रपंच बढ़ने की आशंका रहती है। द्वादश राशियों में वृहस्पति का मिथुन में प्रवेश जातक की ग्रह स्थिति, योगों के अनुसार मिश्रित फलदायी होगा।

मेंष– राशि से तृतीय भावस्थ वृहस्पति का प्रवेश शुभफलदायी होगा। पुराने रूके हुये कामों को गति मिलेगी आय मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। वैवाहिक जीवन में मधुरता रहेगी। आय के नये स्त्रोत प्राप्त होगें। जमीन–जायदाद, वाहन का सुख प्राप्त होगा। घर में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। पराक्रम को बनाये रखें।

वृषभ– राशि सें द्वितीय भावस्थ वृहस्पति धन–मान प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगें। शत्रु शांत होंगे। पुराने रोगों से निजात मिलेगी। परिवार में रूतबा बढ़ेगा । सुसराल पक्ष से सम्बन्धों में मधुरता आऐगी। कार्यक्षेत्र की वृद्धि होगी। मन मुताबिक स्थानान्तरण की सम्भावना है। पुराने ऋण चुकता होगें। धन के लेन देन में सावधानी बरतें।

मिथुन– लग्नस्थ वृहस्पति संतान पक्ष, जीवन–साथी पक्ष व भाग्य पक्ष को मजबूत बनायेगा। कैरियर से सम्बन्धित पुराने अवरोध समाप्त होंगें। विवाह आदि में आने वाली रूकावटें दूर होगी। परिवार में शुभ मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगें। शिक्षा में उन्नित होगी। अपने से छोटों से प्यार व सदभावना रखें।

कर्क– राशि सें बाहरवें वृहस्पति स्वदेश लौटने का व विदेश में घुमने का मौका प्रदान करेगें। शुभ कार्यो में खर्चे होगे। जायदाद का सुख मिलेगा। पुराने कोर्ट केस से राहत मिलेगी। शत्रु मित्रवत व्यवहार करेंगें। धर्म–कर्म के कार्यो में रूचि बढ़ेगी। भाग्य अनुकूल बना रहेगा। झूठ बोलने से बचे।

सिंह– राशि सें ग्यारहवें वृहस्पति धन, संतान, विधा बुद्धि के लिये अनुकुल होगें। बुद्धि पराक्रम से कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। जीवन–साथी पार्टनर से अनुकूलता मिलेगी। छोटे भाई–बहिनो व मित्रो का साथ रहेगा। राजकीय कार्यो में सफलता मिलेगी। भाईयों व मित्रों से सम्बन्ध ठीक रखें।

कन्या– राशि से दशम वृहस्पति पुराने कौटुम्बिक विवाद दूर करेंगे। साढेसाती के प्रकोप से जातक को थोडा आराम मिलेगी। भूमि–भवन व बडे वाहन के सुख प्राप्त होंगे। शत्रु शांत होगें। पुराने रोगो से निजात मिलेगी। पुराने ऋण चुकता होगें। मनोकुल कार्य क्षेत्र में प्रगति होगीं। बडे अधिकारियों से मिलने के अवसर प्राप्त होंगें। आँख मूद कर किसी पर विश्वास न करें।

शेष पेज 19 पर.....

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर, कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

!! कजली तीज व्रत व पर्व !!

पं. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी
भागवताचार्य

श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को **'हरियाली तीज, कजली तीज'** के नाम से जाना जाता है। यह व्रत व पर्व दोनों ही रुपों में प्रसिद्ध है। इसमें परविद्धा तृतीया ग्राह्य है। यदि इस तिथि को श्रवण नक्षत्र हो तो और भी अधिक महत्वप्रद है। श्रवण नक्षत्र ना भी हो तो भी भगवान् विराट् विराटेश्वर विष्णु का पूजन करके व्रत करना श्रेयष्कर है। भगवान् विष्णु की शोडषोपचार पूजा करे, उनकी दिव्य कथाओं एवं चरित्रों का श्रवण करता हुआ **'विष्णुसहस्त्रनाम तथा ऊँ नमो नारायणाय, ऊँ विष्णवे नमः** आदि मंत्रों का जप करें। व्रत में व्रत देवता के मंत्रो का उच्चारण करते हुए विशिष्ट हविद्रव्य से हवन करना चाहिए। विद्वान सदाचारी ब्राह्मण को ब्राह्मणी सहित भोजन कराके दक्षिणाद्रव्य एवं वस्त्राभूषणादि से संतुष्ट कर विदा करें। इस व्रत के प्रभाव से मानव के चार पुरुषार्थ धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष की प्राप्ति में सहजता प्राप्त होती है। भगवान विष्णु की कृपा से "असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय" के मार्ग का साधन सुलभ हो जाता है। इस पावन दिन में गौदान, अन्नदान वस्त्रदान, धनदान, विद्यादान इत्यादि करने से आत्म–कल्याण होता है। सुख सम्पत्ति, आयुष्य एवं सौभाग्य आदि की प्राप्ति होती है।

इस तिथि को महिलायें भवानी–पार्वती का भी पूजन करती हैं। भक्तजन सम्पूर्ण शिव परिवार का पूजन करके आनन्द मगन होते हैं। इस व्रत में तीन बातों को तजने (छोड़ने) का विधान है। (1) पति से छल कपट, (2) झूठ एवं दुर्व्यवहार और (3) परनिन्दा।

इस पावन व्रत पर प्रातः काल सूर्यादय से पूर्व ही जाग कर दैनिक क्रियाओं से निवृत्त हो तृतीया व्रत का विधि पूर्वक संकल्प लेकर ही भगवत् आराधन करें, क्योंकि संकल्प ही सिद्धियों का मूल है। इस तृतीया को 'सिधारा व मधुश्रवा तीज' के नाम से भी जगत् में ख्याति प्राप्त है।

पर्व के रुप में तृतीया को देखा जाय तो समस्त उत्तर भारत में तीज पर्व बड़े उत्साह और धूमधाम से मनाया जाता है। ग्रीष्म ऋतु के अवसान पर काले–कजरारे मेघों को आकाश में घुमड़ता देखकर पावस के प्रारम्भ में पपीहे की पुकार और वर्षा की फुहार से आभ्यन्तर आप्लावित एवं आनन्दित होकर भारतीय संस्कृति में श्रावणी तीज का लोकपर्व मनाया जाता है।

बुन्देलखण्ड के जालौन, झाँसी, दतिया, महोबा, ओरछा आदि क्षेत्रों में इसे हरियाली तीज के नाम से व्रतोत्सव रुप में मनाते हैं। प्रातः काल उद्यानों से विभिन्न वृक्षों जैसे आम, पीपल, अशोक, कदम्ब के पत्तों सहित टहनियाँ, पुष्प, गुच्छ लाकर घरों में पूजा स्थान के पास स्थापित झूले को इनसे सजाते हैं और दिन भर उपवास रखकर भगवान् श्रीकृष्ण के विग्रह (स्वरुप–प्रतिमा) को झूले में रखकर श्रद्धा से झुलाते हैं, साथ में लोकगीतों को मधुर स्वर में गाते हैं। ओरछा, दतिया और चरखारी का तीज पर्व श्री कृष्ण के दोलारोहण के रुप में वृन्दावन–जैसा दिव्य दृश्य उत्पन्न कर देता है। बनारस, जौनपुर आदि पूर्वांचल के जनपदों में तीज पर्व ललनाओं के कजली गीतों से गुंजायमान होकर विशेष आनन्द देता है। प्रायः विवाहिता नवयुतियाँ श्रावणी तीज को अपने मातृग्रहों (पीहर) मैं अपने भाइयों के पास पहुँचती हैं, जहा अपनी सखी–सहेलियों के साथ नववस्त्राभूषणों से सुसज्जित होकर सायंकाल सरोवर या नदियों के किनारे उद्यानों में झूला झूलते हुए कजली तीज के गीत गाती है।

इस पवित्र दिन में सुन्दर से सुन्दर विभिन्न प्रकार के पक्वान्न बनाकर बेटियों को सिंधारा भेजा जाता है। सुहागी मणसकर सास के पाँव छूकर उसे दिया जाता है, यदि सास न हो तो जेठानी या किसी वयोवृद्धा को देना शुभ है। इस तीज पर मेंहदी लगाने का विशेष महत्व है। जिसमें बेलबूटे से समन्वित कलान्तम मेंहदी से स्त्रियाँ व बालिकायें अपने–अपने हाथों को सजाती हैं। स्त्रियों के पैरों में महावर की शोभा तो अनोखी होती है। नवीन–नवीन परिधानों व आभूषणों से सुसज्जित नारियों का सौन्दर्य अति मनोहर प्रतीत होता है। वैसे इस उत्सव को भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तो में मनाया जाता है, परतु राजस्थान में इस उत्सव का अपना विशेष ही महत्व है। कहा जाता है कि इस दिन गौरा विरहाग्नि में तपकर शिव से मिली थी। इस दिन जयपुर में राजपूत लाल रंग के कपड़े पहनते हैं। श्री पार्वतीजी की सवारी बड़ी धूम–धाम से निकाली जाती है।

राजस्थान में तीज पर्व ऋतूत्सव के रुप में सानन्द मनाया जाता है। सावन में सुरम्य हरियाली को पाकर तथा मेघ–घटाओं को देखकर लोक जीवन हर्षोल्लास से यह पर्व हिल–मिलकर मनाता हैं आसमान में घुमड़ती काली घटाओं के कारण इस पर्व को कजली

शेष पेज 15 पर.....

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र सीखिये
प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) नई दिल्ली द्वारा
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़,
आगरा। फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719666777
ई मेल : mail@bhavishydarshan.in

गंगा दशहरा

मन के विकार नष्ट करने एंव कालसर्प योग से मुक्ति के लिए

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ

महात्मा– पुराणों में ऐसा कहा गया है। कि ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को बुधवार के दिन हस्त नक्षत्र में पावन गंगा जी का स्वर्ग लोक से इस भूतल पर अवतरण राजा भगीरथ की तपस्या से ब्रम्हा तथा शिव के दिये वरदान से हुआ। तभी से गंगा निरन्तर प्रवाहशील होकर समुद्र में जाकर मिल जाती है। यदि गंगा दशहरा के दिन आज भी हस्त नक्षत्र तथा बुधवार संयोगवश आ जाए, तो गंगा में स्नान करने का अनंत फल प्राप्त होता है। जीवन में किए हुए मनुष्य के सब पाप धुल जातें है। यूँ भी गंगा स्नान का काफी महात्मय शास्त्रों में बताया गया है, क्यों कि इसका जल सर्वदा विकार रहित, विकार नाशक तथा परम पावन माना गया है। गंगा को माता की पदवी दी गई हैं। इसका जल अमृत के समान गुण कारी माना जाता है।

भविष्य पुराण में लिखा है। कि जो मनुष्य इस पर्व के दिन गंगा के पानी में खड़ा होकर दस बार गंगा–स्त्रोत्र पढता है, वह चाहे गरीब हो या अमीर सामर्थ्यवान हो या असमर्थ वह गंगा को पूजकर उस फल को पाता है। जो को गंगा स्तोत्र को श्रद्धा और विश्वास के साथ पढता या सुनता है। वह शरीर, वाणी और चित्त से होने वाले दस तरह के पापों से मुक्त हो जाता है। इसीलिए इस तिथि को दशहरा कहते है। इस दस प्रकार के पापों में जीव हिंसा, ताप–संतान गौ, गुरू और देवताओं का अपमान, कालसर्प, ग्रहयोग, मातृ–पितृ दोष अंतः करण की मलिनता, मन–वचन कर्म फल–अपराध, भूत प्रेत वाधा और विषाणु–दुष्प्रभाव गिने जाते है। इसके अलावा किसी रोग से विपत्ति में पड़ा व्यक्ति, सांसारिक चक्र में फंसा व्यक्ति भय एंव भव बंधनो से मुक्त हो जाता है। हिन्दुओं के अन्य पर्वो की तरह गंगा–दशहरा मुख्यता स्नान पर्व के रूप में मनाया जाता है। भक्तगंण हर हर गंगे कहकर गंगा के जल में डुंबकी लगाते है। जिसका मतलब होता है। कि गंगा मैया हमारे दस दोषों, पापों का हरण करो ब्रम्हा पुराण में लिखा है। कि –

ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी हस्त संयुता।
हरते दश पापनि तस्माद् दशहरा स्मृता।।

पूजन विधि–विधान– यह पर्व ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को गंगाजल में स्नान करके मनाया जाता है। यदि किसी कारणवश गंगा के जल में स्नान करना संभव नही हो तो किसी भी नदी में स्नान करके इसकी कमी की पूर्ति की जा सकती है। आमतौर पर सामान्य भक्तगण अपने घर में ही स्नान करते समय गंगा जल की कुछ बूंदें डालकर उसे ही गंगाजल मानकर स्नान कर लेते है। स्नान के दौरान गंगा जी मंत्र ऊँ नमौ भगवति हिलि हिलि मिलि मिलि गंगे मां पावय पावय स्वाहा। से भक्तिपूर्वक मन में अर्चना करें। इस दिन गंगा का पूजन गौरी के पूजन के समान ही करने का विधान है। दीप जलाकर गंगा के जल में प्रवाहित करना एक पुण्य परम्परा मानी जाती है। जब दीपमालाएं गंगा जल में बहती है तो ऐसा लगता है। कि मानों आकाश के तारे धरती पर उतर आए है। इस पर्व के अवसर पर श्रद्धालु तर्पण कर स्वंय तथा पूर्वजों के नाम पर जल में गोते लगाते है। स्नान कर दान देते है। इस कृत्य को परम पावन मोक्षदायी माना जाता है। इस दिन शिवलिंग का पूजन करने व रात्रि–जागरण करने का भी विधान है। जिसका अनंत फल प्राप्त होता है।

❋❋❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

हमारे यहा रत्नों को लेब से टेस्टिड (Lab Certified) कराकर उपलब्ध करायें जाते हैं। रत्नों की 100% शुद्धता के लिये रत्न के साथ उसकी शुद्धता का सर्टीफीकेट दिया जाता हैं।

सिन्दूर के चमत्कारिक टोटके

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता

तंत्र एवं धर्म से जुड़े क्रिया–कलापों में सिन्दूर बहुप्रचलित सामग्री हैं इसका उपयोग सामान्य धार्मिक कर्मो से लेकर गूढ़ तांत्रिक कर्मो तक में किया जाता है। सिन्दूर के वैसे तो अनेक प्रयोग हैं, किन्तु यहाँ कतिपय सरल एवं शीघ्र फलदायी टोटके दिए जा रहे हैं। इनका सविधि एवं श्रद्वापूर्वक टोटके करने से अवश्य ही मनोकामना की पूर्ति होगी।

1. जिन व्यक्तियों को मंगली दोष है अथवा मंगल के कारण विवाह में विलम्ब अथवा दाम्पत्य सुख में कमी का अनुभव हो रहा हो, तो उन्हें शुक्लपक्ष के मंगलवार को हनुमान् जी पर सिन्दूर चढ़वाना चाहिए। यह प्रयोग नौ बार करें, तो निश्चय ही सफलता मिलती है।

2. जिन व्यक्तियों का आए दिन वाहनादि से दुर्घटना का सामना करना पड़ रहा है, तो उन्हें मंगलवार के दिन हनुमान जी के मंदिर में सिन्दूर दान करना चाहिए। इससे शीघ्र ही लाभ मिलता है।

3. यदि आपको आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ रहा है, तो एकाक्षी नारियल पर सिन्दूर चढ़ाकर उसे लाल वस्त्र में बाँधकर माँ लक्ष्मी से धन की अभ्यर्थना करते हुए अपने व्यवसाय स्थल पर रखना चाहिए।

4. यदि सूर्य अथवा मंगल आपके लिए मारक ग्रह हैं और उनकी दशा अथवा अन्तर्दशा चल रही है, तो सिन्दूर को बहते हुए जल में प्रवाहित करना चाहिए। ऐसा करने से संबंधित ग्रह का प्रभाव कम हो जाता है।

5. यदि प्रतियोगी परीक्षाओं में आप बैठ रहे हैं, तो गुरु–पुष्य योग अथवा शुक्लपक्ष के पुष्य योग में गणेश जी के मंदिर में सिन्दूर का दान करने से परीक्षा में परिश्रम से अधिक सफलता मिलेगी।

6. यदि रक्त से संबंधित किसी रोग से आप पीड़ित है, तो सिन्दूर को अपने ऊपर से उसार कर बहते हुए जल में प्रवाहित करें, ऐसा करने से रोग में लाभ मिलता है।

7. जिन व्यक्तियों को नजर अधिक लगती है, उन्हें संभव हो सके तो प्रत्येक दिन अन्यथा मंगलवार और शनिवार का हनुमान जी के मंदिर में जाकर उनके चरणों से थोड़ा सा सिन्दूर लेकर अपने मस्तक पर धारण करना चाहिए। ऐसा करने से नजरदोष से बचाव होता है।

8. यदि आपके ऊपर किसी ने अभिचार कर्म कर दिया है अथवा आप भूत–प्रेत इत्यादि ऊपरी बाधा से पीड़ित हैं, तो अपने क्षेत्र के प्रसिद्ध हनुमान् मंदिर में सिन्दूर का चोला चढ़वाना चाहिए।

9. यदि आपके ऊपर अभिचार कर्म किए जाने की आशंका हो, तो शनिवार को दोपहर में किसी एकांत चौराहे पर नींबू काटकर उसकी चार फाँक कर लें और उसमें सिन्दूर डालकर उसे चारों दिशाओं में फेंक दें। ऐसा करने से आपके शत्रु द्वारा किया गया अभिचार कर्म अप्रभावी हो जाता है।

10. अपने घर के मुख्य द्वार के ऊपर सिन्दूर चढ़ी हुई गणेश की प्रतिमा स्थापित करने से घर में सुख–समृद्धि एवं शांति बनी रहती है तथा शत्रुओं द्वारा किसी भी प्रकार के तांत्रिक प्रयोगों के भय से मुक्ति मिलती है।

11. यदि आपके ऊपर किसी शत्रु द्वारा मारण अथवा उच्चाटन जैसे घातक प्रयोग करवाए गए हों, तो ग्यारह लौंग लेकर उन पर सिन्दूर लगा लें और उन्हें एक नीबू में चारों ओर से गाड़ दे। गाड़ते समय शत्रु के नाम कर उच्चारण करते रहें और उस नींबू को चौराहें पर अथवा एकांत स्थान पर गाड़ दें। ऐसा करने से शत्रु कमजोर होगा और उसके द्वारा कराए गए अभिचार कर्म उसे ही पीड़ित करेंगे।

12. यदि आप कर्जे से परेशान हों अथवा व्यवसाय में बाधा उत्पन्न हो रही हो अथवा आय में वृद्धि नहीं हो पा रही हो, तो सिन्दूर का यह प्रयोग आपके लिए अत्यन्त लाभकारी रहेगा। एक सियार सिंगी लेकर उसे एक डिब्बी में रख लें और उसे प्रत्येक पुष्य नक्षत्र में सिन्दूर चढ़ाते रहें। ऐसा करने से शीघ्र ही फल मिलेगा।

13. अपनी तिजोरी में सिन्दूर से युक्त हाथा जोड़ी रखने से आर्थिक लाभ मिलता है।

❋❋❋

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर,
कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना
तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

देवता

कार्ष्णि रमाकान्त शर्मा
आगरा।

सदैव ही बिना भेदभाव के सभी को जो देता ही रहता है, बिना किसी प्राप्त की इच्छा के वह देता है। देवता आदि योनियाँ है, और इनको मोक्ष के प्रति अरुचि होती है। इनके देवत्व में सभी को प्रसन्न करना, सुख देना, प्रकाश करना और विजय की इच्छा रखना मुख्य देवता है, अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र एवं पृथ्वी।

देवों के देव महादेव शिव है, तथा पंच देवता लिंग है। उनका रुप तथा स्वरुप शास्त्रों के अनुसार हैः–

देवता	**रुप**	**स्वरुप**
शिव	वाण	पृथ्वी
विष्णु	सालिगराम	आकाश
सूर्य	स्फटिक	वायु
शक्ति	धातुयंत्र	अग्नि
गणपति	शक्तिवर्गित चत्वुष्कोण	जल

यज्ञ देवता है–इन्द्र, वरुण, प्रजापति

देव रोग है–चिन्ता, भय ईर्ष्या, जलन (तथा इनके वैद्य अश्विनी कुमार है।)

देवताओं का मुख्य भोजन यज्ञ है, इससे देवताओं की पुष्टि होती है, बल मिलता है, शक्तिशाली होते है और सुख की प्राप्ति होती है, जिससे शक्तिमान होकर अधिक देने की क्षमता बढ़ती है। यज्ञ न करने पर यह देवता कमजोर होते हैं।

देवी (शक्ति) और देवता के रंगो का यथार्व स्वरुप हैं

लाल रंग– तेजस्व, पराक्रम, गौरव, यश, शौर्य का प्रतीक है, इसका विवाह आदि मंगल कार्यो में प्रयोग होता है, यह दुर्गाभगवती का प्रिय है।

भगवारंग–त्याग, तपस्या, वैराग, का प्रतीक है।

हरा रंग– अध्यात्मिक प्रेरक है मन में शान्ती एवं हृदय में शीतलता देता, सुख शान्ति का दाता है, लक्ष्मी जी को प्रिय है, उनके वस्त्र हरे रंग के होते है।

पीला रंग–विद्या और विवेक का प्रतीक शान्ति, अध्ययन, विद्वता, योग्यता, एकाग्रता, मानसिक उन्नतियों का प्रतीक है भगवान विष्णु का वस्त्र रंग है, कृष्ण का पीताम्बर है, तथा गणेश जी की पीली धोती है।

नीला रंग– बल, पौरुष, वीर भाव का प्रतीक, क्षत्रिय स्वभाव प्रदर्शित करता है, उद्योगी पौरुष का प्रतीक भगवान राम एवं कृष्ण–नील वर्ण है।, भगवान शिव का प्यारा रंग है।

सफेद रंग– पवित्रता, शुद्वता, विद्या एवं शान्ति का प्रतीक, सरस्वती विद्या की देवी का रंग है।

संसार में जीवों की तीन श्रेणीयाँ है।

(1) सात्विकी (2) राजसी (3) तामसी

सात्विकी–सात्विकी लोग देवोपासक, श्रृद्धा से परिपूर्ण होते है।

राजसी लोग–यक्ष–यक्षिणी राजसी श्रृद्धा भोग प्रवृत के होते है।

तामसी लोग–शराबी, कूट, अहंकार, लोभी, कपटी, जुआरी, गुण युति होते है तथा भूत–प्रेत, पिशाच के उपासक होते है।

शक्ति दुर्गा के नौ रुप हैं

1. शैलपुत्री, 2. ब्रह्मचारिणी, 3. चन्द्रघण्टेति, 4. कूष्माण्डेति, 5. स्कन्द मातेति (कार्तिकेय की माँ), 6. कात्यायिनी, 7. कालरात्री, 8. महागौरी, 9. सिद्धिदात्री।

माया–भगवान श्रीहरि की माया से संसार मोहित हो रहा हे, यह बडे–बडे ज्ञानीयोंके चित्त को भी बलीपूर्वक खीचंकर मोह में डाल देती हैं। और भगवत भक्ति में बाधक है।

महामाया–देवताओं के कार्यसिद्धि के लिए प्रकट होती है। श्री हरि विष्णु भगवान शेषनाग की शैया पर क्षीर सागर में निद्रा में थे तब ब्रह्म जी की स्तुति से महामाया (योगनिद्रा) का प्राकृत्य हुआ।

देवता मेंत्रों के अधीन रहते हैं, और इनको मुख्य शक्ति यज्ञ से ही प्रापत होती है।

शास्त्रों के अनुसार सर्वश्रेष्ठ वृक्ष पीपल है इसकी जड़ में विष्णु, तने में शिव, और शाखाओं में ब्रह्म का निवास रहता है।

शास्त्रों में सभी देवों की उपासना के लिए मंत्र विधि का विधान हैं सभी देवताओं के शास्त्रों में अलग–अलग मंत्र उल्लेखित है।

सतपुरुषों एवं शास्त्रों के अनुसार महामंत्र के

हरे राम हरे राम, राम–राम हरे हरे। हरे कृष्णा हरे कृष्णा, कृष्णा–कृष्णा हरे हरे।। जिसके श्रवण से, गायन से, नृत्य से परमपिता श्री हरि की भावपूर्ण भक्ति होती है। और प्राणी को सुख, शान्ती की प्राप्ति होती है। ''जय श्री कृष्ण'' ❋❋❋

सफलता प्राप्ति की युक्ति- बताती है नवधा भक्ति

सुरेश अग्रवाल
आगरा

सफलता इस बात से नहीं आँकी जाती कि जिन्दगी में हम कितनी ऊँचाई तक जाते हैं, बल्कि इस बात से तय होती है कि हम गिरकर कितनी बार उठते हें। गिर कर बार–बार उठने की शक्ति ही सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है। मुसीबतों को झेलने वालों में आत्म विश्वास उन लोगों की तुलना में ज्यादा होता है, जिन्होनें मुसीबतों का कभी सामना ही नहीं किया। आत्मविश्वासी व्यक्ति ही पिच पर डटे रहकर सफलता के रन बनाते हैं।

जीवन में सभी सफल होना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में ऐसा कुछ करना चाहता है कि उसके कार्यो की सराहना हों और समाज में उसकी पहचान बने, सफल व्यक्ति कोई महान काम नहीं, करते, बल्कि वे छोटे–छोटे कामों को भी जनहित में व्यापक दृष्टिकोण से ही करने के प्रयास में लगे रहते हैं। हर सफलता के पीछे असफलता की कहानी छिपी होती है। असफलता आगे बढ़ाती है, न कि पीछे धकेलती है। **असफलता, सफलता के लिए ड्राइविंग फोर्स भी बन सकती है।** असफलताओं से व्यवहारिक नम्रता का जनम हो है।

सफलता अलग–अलग व्यक्तियों के लिए अलग–अलग मायने रखती है। एक के लिए सफलता का मतलब सिर्फ पैसा है, तो दूसरों के लिए अच्छा स्वास्थ्य, समाज में प्रतिष्ठा, भरापूरा परिवार, खुशी, सन्तोष आदि। रामचरित मानस एक व्यवहारिक एवं दिशा बोधक ग्रन्थ है। इसमें सफलता पाने के लिए शबरी की नवधा भक्ति के सूत्र प्रासंगिक हैं जिनके अपनाने से सफलता आपसे कभी दूर नहीं रह सकेगी।

प्रथम भगति सन्तन कर संगा

बिना उद्देश्य के जीवन का कोई महत्व नहीं होता है। सर्वप्रथम अपने कार्य क्षेत्र–सेवा क्षेत्र यानी लक्ष्य का चयन कीजिए कि हमें अमुक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करनी है और लक्ष्य प्राप्ति हेतु योजना बद्ध तरीके से तैयारी करें। फिर उसी क्षेत्र के नैतिक चरित्र वाले व्यक्तियों के साथ ताल मेल बढ़ायें और निरन्तर सम्पर्क बनाये रखें–**जैसी संगत, वैसी रंगत।**

दूसरी रत मम कथा प्रसंगा

जिस व्यक्ति को आपने अपना 'आदर्श' माना है, उनसे अनुशासित जिज्ञासु बनाकर, सार्थक चर्चा और सलाह मशबरा करते रहे। उनके कथानकों और अनुभवों कर सघन अध्ययन ही सफलता प्राप्त करा सकता है। उनके निर्देशन में आपनी प्राथमिकताएँ तय करें, तो समय की बर्बादी से बचा जा सकता है– **जितनी रति, उतनी मति।**

गुरु पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान

आपकी लक्ष्य पूर्ति में जिस व्यक्ति ने आपको मार्गदशन दिया है, उसका खुलकर सम्मान करे। भूल से भी उसकी आलोचना न करें। सफलता के शिखर पर पहुँचकर भी उसकी उपस्थिति को नजर अन्दाज न करें। भीड में भी उसके निकट जावें और निसंकोच अपनी कृतज्ञता व अभिवादन प्रदर्शित करें–**अमानी बनें।** व्यवहार कुशल और सकारात्मक सोच वाले व्यक्ति ही सफल होते हैं। आपकी सफलता में आपके 'आदर्श' का योगदान है।

चौथी भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान

सफलता के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा मनुष्य का अहंकार, क्रोध और कपट होता है। स्वंय को सुपरमैन दर्शाना, दूसरों को नगण्य समझना और उनके विचारों को अनसुना करना तथा मेरी बात ही शतप्रतिशत सही है– ये बातें व्यक्ति की प्रतिष्ठा को गिराती है और उनके अहं को प्रकट करती है। अंहकारी वयक्ति को क्रोध शीघ्र आता है और यहाँ तक कि वह दूसरों के साथ कपट पूर्ण व्यवहार भी कर बैठता है। अतः सफल होने के लिए अहंकार से दूर रहकर अपनी बात कहें कि और प्राप्त पद की गरिमा के अनुरुप व्यवहार करें। **पद का मद न करें।**

मंत्र जाप मम दृढ़ विस्वासा

चाहत और दृढ विश्वास में बहुत अन्तर है। हमारी चाहतें तो बदलती रहती है, लेकिन दृढ़ता और विश्वास नहीं। दवाब में चाहत

शेष पेज 19 पर.....

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री,
असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक
मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

ज्योतिष - विद्या या मिथ्या

श्रीमति रेखा जैन
आगरा

ज्योतिष शायद सबसे पुराना विषय है। और सबसे ज्यादा परिष्कृत विषय भी, क्योंकि मनुष्य जाति के इतिहास में ऐसा कोई भी समय नहीं था जब ज्योतिष मौजूद न हो। जीससे पच्चीस हजार वर्ष पूर्व सुमेर में मिले हुए हड्डियों के अवशेषों पर ज्योतिष के चिन्ह अंकित थे ऋग्वेद में पंचानवे हजार वर्ष पूर्व ग्रह नक्षत्रों की जैसी स्थिति थी उसका उल्लेख है।

लेकिन आजकल ज्योतिष को लेकर तरह–तरह की भ्रान्ति सामने आती है। कोई इसे कोरा भ्रम तो कोई अन्ध विश्वास मानता है। लेकिन दूसरी ओर कुछ लोग ज्योतिष को सम्पूर्ण विज्ञान मानते है। आलोचको का कहना है कि यदि वास्तव में ज्योतिष सत्य है तो इसे प्रमाणित किया जाये । लेकिन ज्योतिष को प्रमाणित करना इतना आसान नहीं है। और ना ही इसे नकारा जा सकता । ठीक वैसे है जैसे कि यह कहा जाता है कि ईश्वर है और सभी समय सभी जगह व्याप्त है। क्या किसी ने ईश्वर देखा है। और यदि ईश्वर है तो इसे प्रमाणित किया जाये। लेकिन इस बात को तो सभी मानते है। कि ईश्वर है। इसे नकारा नहीं जा सकता।

ज्योतिष की सबसे अधिक मान्यता भारत में ही पैदा हुई। क्योंकि ज्योतिष में गणनाएं होती है। और गणनाएं गणित के बिना नहीं हो सकती। अंक गणित के जो अंक है। वे भारत में ही पैदा हुए। और धीरे–धीरे सारे विश्व में फैल गये। गणित का प्रचलन भारतीय ज्योतिष के प्रभाव से ही हुआ। 1920 में चीजेंस्वकी नाम रुसी वैज्ञानिक ने एक खोज की और पाया कि सूर्य पर हर गयारह वर्ष में आणविक विस्फोट होता है। और तभी पृथ्वी पर युद्ध और क्रान्तियों के सूत्रपात होते है। चीजेंस्वकी के अनुसार विगत सात सौ वर्षो में जब भी ऐसी घटना होती हे तो पृथ्वी पर दुर्घटनाए घटती थी।

1950 में जियाजारजी गिआरडी ने एक नयी साइंस को जन्म दिया जिसका नाम है। कॉस्मिक के मिस्ट्री (ब्रह्माण्ड रसायन)। उसने वैज्ञानिक आधार पर प्रयोग शालाओं में अनेको प्रयोग करके यह सिद्ध कर दिया कि यह पूरा ब्रह्माण्ड एक शरीर है। उसमें से कोई चीज अलग नहीं की जा सकती। जब भी पूरे ब्रह्माण्ड में कहीं कोई बदलाव आता है तो वह कहीं न कही प्रत्येक प्राणी को प्रभावित करता है।

अमरीकन विचारक फेंक ब्राउन ने इस बात का खण्डन किया कि पश्चिम में दौसौ मील के बाद अंतरिक्ष शून्य है और पृथ्वी की हवाएं समाप्त हो जाती है। लेकिन अंतरिक्ष यात्रियों ने यह सिद्ध कर दिया कि अंतरिक्ष शून्य नहीं है। और न ही मृत हैं फेंक ब्राउन एक दूसरे शास्त्र का भी अन्वेषक है। जो अभी अधिक प्रचलित नहीं है। जिसका नाम है प्लेनेटरी हेरोडिटी (उपग्रही बंशानुक्र)। जब मनुष्य ने आर्टीफीसियल सेटेलाइट अंतरिक्ष में छोडे वैसे ही पता चला कि पूरे ब्रह्माण्ड में सभी नक्षत्रों से, तारा समूहों से, ग्रह उपग्रहों से निरन्तर अनन्त प्रकार की किरणों का जाल प्रभावित होता है। जो पृथ्वी से टकराता है। और पृथ्वी पर कोई भी चीज ऐसी नहीं है। जो उसके प्रभाव से अछूती रहें। अंगेजी में एक शब्द है लुनाटिक। जो हजारों साल पुराना है। लुनाटिक का मतलब है कि चाँदमारा, सह एक पुराना शब्द है। जिसका अर्थ है चाँद के द्वारा हताहत। अर्थात जिसका दिमाग काम न करता हो। ज्योतिष में भी कहा गया है कि चाँद मन मस्तिष्क का कारक है। वह सीधी तौर पर इसे प्रभावित करता है। ज्योतिष एक वैज्ञानिक चिन्तन है। वह कहता है। भविष्य अतीत से ही निकालेगा। आज कल से निकलता है। और आने वाला कल आज से होने वाला है वह किसी सूक्ष्म अर्थ में आज भी मौजूद होना चाहिए बस थोड़ा समझने का प्रयास करें।

अमेरिकन राष्ट्रपति अबह्मम लिंकन को अपनी हत्या से तीन दिन पूर्व सपने में अभास हुआ कि उनकी अमुख स्थान पर हत्या कर दी गयी है। और ऐसा ही हुआ उनकी हत्या ठीक वहीं की गयी जहाँ उन्हें सपने में दिखायी दी थी। ज्योतिष का मानना है कि

शेष पेज 18 पर.....

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

16 जून - 15 जुलाई

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ–इस माह मे धनहानि होने की संभावना रहेगी। आपके प्रियजनों या रिस्तेदारों में किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। वृथाविवाद से दूर रहें। अपने कार्य से आपको लाभ की प्राप्ति होगी।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी। प्रियजनों का सुख प्राप्त होगा। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी। कार्य से निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस मास में वायु विकार संबंधी कारोबार में लाभ होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। कार्य से निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी। शत्रु प्रबल होंगे।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। यात्रा में कष्ट होना भी संभव है। अर्थ हानि होने की संभावना रहेगी। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– नई योजनाओं से लाभ होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों का सुख प्राप्त होगा। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। यात्रा में कष्ट से बचें। रोग का भय रहेगा। मास के अन्त में लाभ की प्राप्ति होगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो–पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय में बदलाव होने की संभावना रहेगी। आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। रोग का भय रहेगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। आय के बराबर व्यय होगा। मास के अन्त में शुभ रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय ठीक रहेगा। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– व्यापार में धन हानि होने की संभावना रहेगी। जमीन-जायदाद संबंधि त परेशानी लगी रहेंगी। यात्रा में कष्ट से बचें। व्यवसाय में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। शत्रु प्रबल रहेंगे। यात्रा होना भी संभव है। मास के अन्त में स्वास्थ्य अधिक खराब रहेगा। अपमान होने का भय रहेगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अर्थ लाभ होकर भी हानि होने का भय रहेगा। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। परेशानी होने की संभावना रहेगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगा। शत्रुओं की वृद्धि होने की संभावना रहेगी। अच्छे लोगों से मेल सूत्र जुड़ेंगे। भाइयों का सुख प्राप्त होगा।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- इस मास में आप शत्रुओं पर हावी रहेंगे। चोट से बचें। योजनाओं से लाभ होगा। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा।इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

जून	जुलाई
16 भानु सप्तमी **17** दुर्गाष्टमी	**3** योगिनी एकादशी व्रत **5** प्रदोष व्रत
(धूमावती जं.) **18** माहेश्वरी नवमी	**8** अमावस्या (स्नान/दान)
19 गंगा दशहरा, निर्जला एका. व्रत	**10** रथयात्रा जगन्नाथपुरी
21 प्रदोष व्रत **23** पूर्णिमा व्रत, वट	**11** विश्व जनसंख्या दिवस
सावित्री व्रत, संत कवीरदास जयंती	**12** श्री विनायक चतुर्थी व्रत
24 हरगोविन्द सिंह जयंती	**13** स्कन्ध पंचमी **14** कुमार षष्ठी
30 शीतलाष्टमी(सीताष्टमी)व्रत	**15** सूर्य सप्तमी

ग्रहारम्भ मुहूर्त
जून – नही है। जुलाई– नही है।
गृह प्रवेश मुहूत
जून– नही हैं। जुलाई– नही हैं।
दुकान शुरू करने का मुहूर्त
जून–16, 17, 19, 20, 23
जुलाई – 10, 13, 15
नामकरण संस्कार मुहूर्त
जून– 19, 26
जुलाई–5, 10, 15

सर्वार्थ सिद्ध योग

जून	जुलाई
16 ता. 13:33 से 29:24 तक	02 ता. सू.उ. से 17:41 तक
21 ता. 09:44 से 29:26 तक	03 ता. 20:11 से 29:28 तक
23 ता. सू.उ. से 25:12 तक	14 ता. सू.उ. से 29:32 तक
30 ता. सू.उ. से 14:23 तक	

16 जुलाई - 15 अगस्त

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ- आर्थिक लाभ का सुख प्राप्त होगा। सन्तान पक्ष अच्छा रहेगा। फालतू की चिन्ता में डूबे रहेगें। शत्रु पक्ष कमजोर रहेगा। प्रियजनों से मनमुटाव रहेगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में प्रियजनों से मनमुटाव रहेगा। आपकी पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। कार्यान्तर से लाभ मिलेगा। हानि होने की भी संभावना रहेगी। इस मास मे स्वास्थ्य उत्तम नही रहेगा।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस मास मे स्वास्थ्य ठीक नही रहेगा। वायुविकार जैसे रोग से ग्रस्त रहेंगे। प्रियजनों का पूर्ण सुख मिलेगा। सम्पत्ति का सुख प्राप्त होगा। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी। नेत्र कष्ट जैंसे रोग से ग्रस्त रहेंगे।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो–पत्नि की तरफ से चिन्ता रहेगी। नई-नई योजनाओं से आपको हानि प्राप्त होगी। मानसिक तनाव रहेगा। प्रियजनों से मनमुटाव रहेगा। इस मास में आपको शारीरिक कष्ट होने का भय रहेगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– आपको सन्तानपक्ष से अच्छी सूचनाओं की प्राप्ति होगी। स्थानान्तर का विचार होगा। कारोबार में रूकावटें आयेंगी एवं नुकसान होने की संभावना रहेगी। पत्नि का पूर्ण सुख मिलेगा।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– ध न लाभ का सुख प्राप्त होगा। घरेलू परेशानिया निरंतर रहेगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। कारोबार या व्यवसाय मे रूकावटें आने की संभावना रहेगी। इस मास में स्वास्थ्य उत्तम नही रहेगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– प्रयजनों से मनमुटाव होने की संभावना रहेगी। आपको अपनी पत्नि से लाभ की प्राप्ति होगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। इस मास मे स्वास्थ्य ठीक रहेगा। सम्पत्ति का सुख प्राप्त होगा। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। कार्य से लाभ की प्राप्ति होगी। मानसिक तनाव रहेगा। इस मास मे आपको राज भय रहेगा। प्रियजनों का पूर्ण सुख मिलेगा। घरेलू परेशानियां लगी रहेगी।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- कारोबार में बदलाव होने की संभावना रहेगा। आर्थिक लाभ होगा परन्तु फिर भी हानि का भय रहेगा। मानसिक अशांति बनी रहेगी। पत्नि की तरफ से चिन्ता रहेगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में पित्तविकार जैसे रोग से ग्रस्त रहेंगे। कारोबार ठीक चलेगा। इस मास मे आपको राज भय रहेगा। मानसिक अशांति बनी रहेगी। प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति बनने की संभावना होगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- हानि होने की भी संभावना रहेगी।सन्तान पक्ष से चिन्ताए बनी रहेगी। यात्रा मे चोट लगना संभव हैं। कारोबार ठीक से चलेगा। सम्पत्ति का सुख प्राप्त होगा।

मीन(PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। कारोबार ठीक चलेगा। यात्रा का सुख प्राप्त होगा। नेत्र कष्ट जैंसे रोग से ग्रस्त रहेंगे। आपकी पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

जुलाई	अगस्त
16 दुर्गाष्टमी **17** भण्डली नवमी **19** देवशयनी एकादशी व्रत **20** प्रदोष व्रत **22** गुरु पूर्णिमा (मुड़िया पुनो), पार्थिव पूजन प्रा. **23** मंगला गौरी व्रत, बालगंगाधर तिलक जं. **25** श्री गणेश चतुं. व्रत **27** नाग पंचमी (बंगाल) **28** षष्ठी **29** श्रावण सोम. व्रत, शीतला सप्तमी **30** कालाष्टमी, मंगला गौरी व्रत	**2** कामदा एका. व्रत **4** प्रदोष व्रत **5** श्रावण सोमवार व्रत **6** हरियाली अमावस्या, मंगला गौरी व्रत **7** श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर पु. दि. **9** हरियाली तीज **10** श्री गणेश चतुर्थी व्रत **11** श्री नाग पंचमी **12** श्रावण सोम. व्रत **13** मंगलागौरी व्रत ,गोस्वामी तुलसीदास जं. **14** दुर्गाष्टमी **15** स्वतंत्रता दिवस

ग्रहारम्भ मुहूर्त

जुलाई– 19
अगस्त– 10, 12

गृह प्रवेश मुहूर्त

जुलाई – नही है। अगस्त – 10, 12

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

जुलाई–19, 21
अगस्त – 9, 10, 12

नामकरण संस्कार मुहूर्त

जुलाई– 19, 24, 25, 29
अगस्त –1, 2

सर्वार्थ सिद्ध योग

जुलाई	अगस्त
18 ता. 19:01 से सू.उ. तक	05 ता. 17:43 से 29:41 तक
19 ता. सू.उ. से 17:02 तक	11 ता. सू.उ. से 26:51 तक
21 ता. सू.उ. से 11:49 तक	15 ता. सू.उ. से 24:49 तक
28 ता. 22:56 से 29:38 तक	
31 ता. सू.उ. से 29:20 तक	

सांवली सूरत होना अच्छे हृदय की निशानी

मोनिका गुप्ता
ज्योतिष ऋषि, शास्त्राचार्या
टैरो कार्ड रीडर

अगर आपका रंग सांवला है तो आपको निराश होने के बजाय खुश होना चाहिये।

समुद्रशास्त्र के अनुसार सांवली सूरत होना अच्छे हृदय की निशानी होती है। ऐसे लोग वफादार होते है।

और अपने रिश्तों के प्रति समर्पित रहतें हैं। कठिन समय आने पर यह मुश्किलों का सामना बड़ी ही दृढता और साहस से काम लेते हैं। सांवले रंग वाले व्यक्ति अधिक परिश्रमी होते है और आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने के लिए लगन पूर्वक कार्य पर ध्यान देते है। समुद्रशास्त्र के अनुसार इस रंग के व्यक्ति की आर्थिक स्थिति सामान्य रुप से अच्छी होती है। यह एक स्थान पर लंबे समय तक टिक कर रहना पसंद नहीं करते हैं। इस प्रकार इनका मन भी अस्थिर रहता है।

सावंली सूरत वाली महिलायें अपने दांम्पत्य जीवन को बेहतर बनाने की कला में निपुण होती है। काम की भावना इनमें अधिक होती है। निकट सगे–संबंधियों एवं रिश्तेदारों के प्रति आमतौर पर इनका व्यवहार स्नेह पूर्ण होता है। ❋❋❋

कर्ज मुक्ति का मंत्र

पं. दिलीप उपाध्याय
आगरा

किसी से उधार लेने पर उसके चुकाने की व्यवस्था नही हो रही हो , व्याज बढ रहा हो व आय के साधक बन्द हो रहे हो, रोजाना देनदारो की मांग से दुखी व परेशान हो रहे हो तो ऐसी स्थिति से मुक्ति पाने के लिये एक सामान्य पर अचूक उपाय है। जिसे पूरी श्रद्धा तथा विश्वास से किया जाये तो तुरन्त फल की प्राप्ति होती है। यह मेरा अजमाया हुआ है।

प्राति शनिवार शमशान अथवा कब्रिस्तान में स्थित कुयें या नल से एक लोटा जल लाकर उसमें थोडी (चीनी) शक्कर मिलाले। इस मीठे जल को सूर्यउदय से पहले पीपल की जड़ में चढावें। ऐसा सात शनिवार लगातार करे नागा नही होनी चाहिए जल भर कर पीपल के पेड तक लेजाये तब तक इस मंत्र का जप करे ऊँ हनुमते नमः। मानसिक जप करना है सात शनिवार से पूर्व ही आप को आश्चर्य जनक परिणाम प्राप्त होने लगेगें आपकी आय के नये –नये साधन बनेगे तथा रूका हुआ कार्य भी चलने लगेगा। व्यवसाय में बृद्धि होकर शीघ्र कर्जा मुक्त होगे।

❋❋❋

शेष पेज 7 से आगे.....

तीज (कज्जली तीज) अथवा हरियाली के कारण हरियाली तीज के नाम से पुकारते हैं।

श्रावणशुक्ल तृतीया को बालिकाएँ एवं नवविवाहिता बधुएँ इस पर्व को मनाने के लिए एक दिन पूर्व से अपने हाथों तथा पाँवों में कलात्मक ढंग से मेंहँदी लगाती हैं। जिसे 'मेहँदी–माँडणा' के नाम से जाना जाता है। दूसरे दिन वे प्रसन्नता से अपने पिता के घर जाती हैं, जहाँ उन्हें नयी पोशाकें, गहने आदि दिये जाते हैं तथा भोजन–पक्वान्न आदि से तृप्त किया जाता है।

राजस्थानी लोकगीतों के अध्ययन से पता चलता है कि नवविवाहिता पत्नी दूरदेश गये अपने पति की तीज पर्व पर घर आने की कामना करती है।

तीजपर्व सम्बन्धी अन्य लोकगीतों में नारी मन मार्मिक मनोभावना इस प्रकार सुन्दर रुप में व्यक्त हुइ हैः–

सावोणी री कजली तीज, साजन प्यारा पावणां जी।
नीमडली.....।।
साहिवा जी हिवडा न आस घडाय।
दलड़ी तो महगां मोल की जी।।
नीमडली...।।

इसी प्रकार कजली तीज पर इस कुलकामिनी की कामना निम्नलिखित लोकगीत में इस रुप में व्यक्त हुई।

मारा माथा न मेमद लाय, मारा अनजा मारु थहीं ही रहो जी।
थहीं ही रहो जी, लखपतिया ढोला थही ही रहो जी।।

इस उमंग पर्व के बहुविध भावों में एक यह भाव भी द्रष्टव्य है–

राज म्हारी नाव घटा पर कजलीं तीज,
तीजा जो पधारो जी म्हाका सिरधारद्ध
राज म्हारा माथा न में मदल्याय रखड़ी मुलाओं जी।।
राज म्हारी नाव.....

तीज पर्व का उत्कृष्ट स्वरुप एवं लोक–जीवन में महत्त्व इस गीत में इस प्रकार व्यक्त हुआ है–

पगल्या न पायल लाय जो ढोला, साहिबा, जी घूंगरा रतन जडाय़ें।
मुकनगढ़ हो जी किशनगढ़ चाकरी, ढोला साहिबा जी तीज सुण्यां घर आय।
तीजा तो तीजा करा ढोला, तीजा को बड़ो हैं त्यौहार।।

इस तीज–त्यौहार के अवसर पर राजस्थान में झूले लगते हैं और नदियों या सरोवरों के तटों पर मेलों का सुन्दर आयोजन होता है। इस त्यौहार के आस–पास खेतों में खरीफ फसलों की बोआई भी शुरु हो जाती है। अतः लोकगीतों में इस अवसर को सुखद, सुरम्य और सुहावने रुप में गाया जाता है। मोठ, बाजरा, फली आदि की बोआई के लिये कृषक तीज पर्व पर वर्षा की महिमा मार्मिक रुप में व्यक्त करते हैं। प्रकृति एवं मानव हृदय की भव्य भावना की अभिव्यक्ति तीज पर्व में निहित है। तीज पर्व (कजली तीज, हरियाली तीज, श्रावणी तीज,) की महत्ता स्वतः सिद्ध है।

❋❋❋

मुख का मीठा-मन का कड़वा

(मामा की कलम से)

विजय शर्मा
आगरा

मुख के मीठे-मन के कडवे
प्राणी को मित्र मत बनाओं।

गिद्ध ने कथा इस प्रकार सुनानी आरम्भ की–

मालव देश में पद्मगर्भ नाम का एक सरोवर था। एक दिन उसके तट पर एक बूढ़ा बगुला चिन्तित–सा बैठा था।

सरोवर में बहुत से कीट–पतंगे, मछलियां, केकड़े आदि रहते थे। बगुले को इस प्रकार उदास देखकर केकड़े ने पूछा–"महाशय! आप भोजन की तलाश छोड़कर यहां क्यों बैठे हैं? क्या बात हैं?"

केकडे की बात सुनकर बगुला बोला, "भाई! इस सरोवर की मछलियां ही मेरे जीवन का आधार हैं। आज जब मैं शहर में घूम रहा था तो, मैंने सुना कि मछेरे यहां आर मछलियों काके मारंगे। तब से मैं यह सोच रहा हूं कि वे मछेरे यहां आकर मछलियां पकड़कर ले जायेगें तो मैं क्या खाऊंगा? इस तरह जब मुझे भोजन ही नहीं मिलेगा तो निकट बगुला कई दिनों से भूखा था। वह बहुत थक भी गया था। एक तो भूख और ऊपर से थकावट। थकान का अहसास बगुले को कुछ न करने के लिए कह रहा था, जिस कारण वह बिना कुछ किये अपना शिकार प्राप्त करना चाहता था। बगुले ने केंकड़े से अपनी बात को इस ढंग से कहा था कि उसकी आवाज सुनकर सरोवर की सारी मछलियां वहीं पानी में एकत्र होने लगी थीं।

मछलियों को अपने जाति शत्रु पर दया आ रही थी और स्वयं भी मन में सोच रही थी कि कहीं बगुला झूठ तो नहीं बोल रहा। कुछ मछलियों ने आपस में सलाह की कि क्या यह बगुला वास्तव में सच कह रहा है या हमें बेवकूफ बना रहा है।

कुछ ने कहा, "नहीं आज तो यह झूठ नहीं बोलता लग रहा–क्योंकि यदि यह झूठ बोलता तो इसकी आंखों में आंसू न होते और यह हमारे कल्याण की बात न करता।"

बगुले की बात सुनकर मछलियों ने सोचा– इस समय तो यह हमारे कल्याण की बात ही कर रहा है। इसलिए इसी से पूछना चाहिए कि ऐसे समय में हम क्या करें? शास्त्रों में भी लिखा है कि भला चाहने वाले शत्रु से सन्धि कर लेनी चाहिए। वैसे भी भलाई–बुराई से ही मित्र व शत्रु की पहचाान होती हैं।" यह सोचकर मछलियां बगुले से बोलीं,, "अरे भाई बगुले, इस विपत्ति से बचने का क्या कोई उपाय नहीं हैं?"

बगुला बोला, "इस समय तो यही उपाय हे कि इस सरोवर को छोड़कर किसी दूसरे सरोवर में चले जाना चाहिए। यदि आप लोग चाहें तो मैं आप लोगों को एक–एक करके पास वाले सरोवर में ले जा सकता हूं।"

बगुले की बात सुनकर सभी मछलियां एक स्वर में बोलीं, "तो ऐसा ही कर दो।" बगुला मन ही मन आनन्दित हो रहा था। सोच रहा था कि अब तो बिना कमाये खाने को मिल रहा है। सुबह से तो खूब मछलियां खाने को मिलेंगी। बगुले को सारी रात नींद नहीं आई, उसे सुबह का बड़ी बेताबी से इंजतार था।

बगुले ने अपनी पत्नी से रात को उसके पास बैठकर कहा, "सुबह मैं तुम्हारी दावत करना चाहता हूं, कल तुम मेरे साथ रहना, कहीं मत जाना।"

पत्नी बोली, "ऐसी क्या चीज तुम्हें पा गयी है जो आज तुम इतना खुश हो?"

बगुला बोला, "बस आज तुम मुझसे कुछ न पूछो। मैंने तुम्हे कह दिया है कि तुम कल मेरे साथ रहना, मैं तुम्हें बढ़िया खाना खिलाऊंगा।"

"वो कैसे? "पत्नी बोली।

"अरे, सुबह तो होने दो, सब पता चल जाएगा, तुम्हारा पति कितना बुद्धिमान है।" बगुला हर्षित स्वर में बोला।

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. 10039621088, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

"पहले बताओं तो सही, ऐसी क्या चीज तुम मुझे खिलाना चाहते हो? पत्नी ने पति की आवाज में आवाज मिलाकर पूछा।

"नहीं मानोगी–तो लो अब सुनो अपने पतिदेव की बुद्धिमानी की दास्तान–मैंने आज शाम सरोवर की सारी मछलियों को एक पट्टी पढ़ाई है कि शहर से कुछ मछेरे इस सरोवर पर आएंगे और सरोवर की सारी मछलियां को पकडकर ले जाएंगे।" बगुले ने पति को बताया।

"इससे तुम्हें क्या लाभ होगा, बल्कि यूं कहिए कि अब तो आपको और हमें किसी दूसरे सरोवर को ढूंढना पड़ेगा। अधिक मेहनत करनी पड़ेगी। इससे तो हमें ही हानि होगी।" पत्नी बोली।

"अरे नहीं, हानि नहीं होगी, तुमने पूरी बात तो सुनी हीं। पहले पूरी बात तो सुन लीजिए? तब बताना हमें हानि होगी या लाभ।" बगुले ने पत्नी को तसल्ली देते हुए कहा, "हु आ यूं कि शाम के समय मैं सरोवर में बैठा था तो एक केकड़े ने मुझसे पूछा कि मैं इस प्रकार क्यों बैठा हूं–मुझे क्या अफसोस है, तब मैंने उसे बताया कि मैं शहर से आ रहा हूं और मैंने सुना है कि मछेरे सरोवर की सारी मछलियां पकड़कर ले जाएंगे, तो सरोवर की सारी मछलियां मेरी बात सुनकर कहने लगीं कि अब हमें क्या करना चाहिए?"

इस पर मछलियां एक स्वर में बोली, "हम दूसरे सरोवर में कैसे जा सकते हैं?"

तब मैंने उनसे कहा, "मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूं।"

"तुम सहायता कर सकते हो–तुम क्या सहायता करोगे उन मछलियों की?" पत्नी ने बीच में पुनः टोक दिया।

बगुले को कुछ गुस्सा आया और उसने अपनी प्यारी को हल्की डांट देते हुए कहा, "अब मुझे मत टोकना–पहले पूरी बात सुन लिया करो, तब कुछ बोला करो– हां तो मैं बता रहा था कि मैंने मछलियों की सहायता करने का उनसे वादा किया है। इस वादे में मैंने उनसे कहा कि मैं तुमको एक–एक करके अपनी चोंच में भरकर दूसरे सरोवर में पहुंचा सकता हूं।"

इस तरह आपको क्या फायदा होगा?" पत्नी ने उसे फिर टोक दिया।

"चुप! पहले पूरी बात सुन–तू बोलती बहुत है, बस तेरे अन्दर एक यही कमी हैं, नहीं तो तू हीरा हैं।" बगुला आज अपनी पत्नी पर कुछ ज्यादा ही मेहरबान हो रहा था। अन्य दिनो में तो वह इतनी बात पर उसे मारने लगता था, परन्तु आज उसे कुछ भी नहीं कह रहा था–बल्कि उसकी हर बात को मजाक में ले जा रहा था।

बगुला आगे कहने लगा–"इस तरह मैं उनमें से एक–एक करके लाता रहूंगा और तुम उन्हें एक–एक करके खाती रहना। एक तुम खाना और एक मैं, फिर मैं सारी मछलियों को एक–एक करके लाता रहूंगा, तुम और मैं दोनों खूब मजे में खाएंगे।"

अब बता इसमें हमें क्या हानि होने वाली है? अरी बावली इसमें तो लाभ ही लाभ है। हानि का तो नाम ही मैंने अपने शब्दकोश में निकाल दिया है।

"अच्छा! अब तुम सोओगे या नहीं। सारी रात यूं ही बातें करते रहोगें, तो फिर सुबह को एक–दो मछली आपके हाथ में न निकल जायेंगी।" पत्नी ने कहा।"

"अच्छा तो अब तू भी सो जा और मैं भी सो रहा हूं।"

दोनों ने चैन की नींद ली और सुबह बगुला जब सरोवर पहुंचा, तो सभी मछलियां अपनी जान बचाने के लिए उसके साथ पहले जाने को तैयार हो गई।

बगुला बोला, "अरे भाई! मैं सबको एक साथ तो ले जा नहीं सकता। आप लोग इतनी जल्दी न करें, मै। एक–एक करके सबको स्थानान्तरित कर दूंगा।"

बगुला बारी–बारी से एक मछली को ले जाता और कुछ दूर पर एक झाड़ी के पीछे अपनी पत्नी के साथ मिलकर उस मछली को खा जाता और फिर, इसी तरह उन्होंने बहुत–सी मछलियां खा लीं।

इस प्रकार जब बगुले को कई दिन हो गये और सरोवर में कुद ही मछलियां शेष रह गयीं तो एक दिन केकडे ने बगुले से कहा, "भाई बगुले! तुम सबको ले जाओगे, मुझे यहीं छोड़ जाओगे क्या?"

बगुला कई दिन से मछलियां खा रहा था। उसने सोचा कि मैंने जीवन में कभी केकडें का मांस नहीं खाया। आज सौभाग्य मिल रहा है तो क्यों न आज इसे ही खाया जाए।

यह सोचकर बगुले ने कहा, "अरे भाई, यह क्या कहते हो! तुम्हें नहीं ले जाऊंगा तो किसे ले जाऊंगा!"

बगुले ने केकड़े को अपनी पीठ पर बैठा लिया और फिर उसी ओर चल दिया, जहां उसने मछलियां खाकर उनकी हड्डियों का ढेर लगाया हुआ था।

रास्ते में केकडे ने हड्डियो के ढेर को देखकर सारी बात समझ ली। वह सोचने लगा–मौत से तब तक नहीं डरना चाहिए जब तक वह आ न जाए। विपत्ति के समय में भयभीत होने की अपेक्षा उससे मुक्ति का उपाय करना चाहिए। अतः अब समयानुसार उचित कार्यवाही करुंगा।

यह सोचकर केकड़े ने बगुले की पीठ पर बैठे–बैठे उसकी गर्दन पर अपने पैने दांत गाड़ दिये और फिर उसे इतनी बुरी तरह काटा कि वह वहीं मर गया।

कथा सुनाकर गिद्ध मन्त्री बोला, "महाराज! इसीलिए मैं कहता हूं कि नीच बड़ा बनने पर भी अपनी नीचता नहीं छोड़ता। वह लोभ करता है और नष्ट हो जाता है।"

"मन्त्री! मैने तो यही सोचा था कि मेघवर्ण कर्पूर द्वीप का राजा हो जायेगा तो वह वहां से सुन्दर–सुन्दर पदार्थ हमारे लिए भेजा करेगा और हम सब यहां पर आनन्द से रहेंगे।" राजा चित्रवर्ण बोला।

राजा की बात सुनकर मन्त्री गिद्ध बोला, "महाराज! जो भविष्य का विचार करके मन ही मन प्रसन्न होता है वह बर्तन फोड़ने वाले ब्राह्मण की तरह दुःखी होता है।"

राजा ने उत्सुकतावश पूछा–"वो कैसे?"

"सुनिये महाराज, मैं कथा कहता हूं– मन्त्री गिद्ध बोला।

❋❋❋

शेष पेज 04 **से आगे**.....

किसी दुर्घटना से अकाल मृत्यु की संभावना रहती है। भवन के आकार एवं दिशाओं में स्थित वास्तुदोष के अतिरिक्त अन्य प्रकार के वास्तुदोष भी हैं, जो भवन के निवासियों की बीमारियों का कारण बन सकते हैं।

1. घर के समक्ष यदि कुँआ हो, तो निवासियों को मिर्गी रोग होने की संभावना रहती है।

2. घर में प्रवेश करते ही स्नानगृह हो, तो वहाँ के निवासी अस्वस्थ रहते हैं।

3. पश्चिमी या दक्षिणी नैऋत्य में मकान का मुख्य द्वार हो, तो गृहस्वामी या स्वामिनी किसी गंभीर व्याधि के ग्रास बन सकते हैं।

4. रसोईघर की स्थापना ईशान (उत्तर–पूर्व) में होने से वहाँ के निवासी पेट की बीमारियों अथवा गैस की बीमारी से ग्रस्त रहेंगे।

5. घर में सीढ़ियाँ ईशान (उत्तर–पूर्व) अथवा ब्रह्म स्थल (मध्य) में होने पर गृहस्वामी या अन्य अस्वस्थ रहते हैं।

6. घर के अति समीप किसी विशाल जलकुण्ड की स्थापना हो, तो घर के निवासियों को फेफड़े संबंधी अथवा चर्म रोग होने की संभावना रहती है।

7. रसोईघर से सटे स्थान (दक्षिणी की ओर) पर कुँआ बना हो, तो उस घर की गृहिणी अक्सर बीमार रहती है।

8. सीढ़ियों वाले कक्ष में रोगी को कतई न सुलाएँ चाहे वहाँ सीढ़ियों का आरंभ हो अथवा अंत इससे उसे शीघ्र आरोग्य लाभ नहीं होता।

9. आग्नेय (दक्षिण–पूर्व) में भूखण्ड अथवा मकान के अन्दर किसी प्रकार का गढ्ढा अथवा जलस्त्रोत परिवार के ज्येष्ठ पुत्र के लिए दुर्घटना, फेफड़े, आँत, उदर रोग अथवा अकाल मृत्यु प्रदायी रहता है।

10. आग्नेय खण्ड पर निर्मित भवन में यदि दक्षिणी नैऋत्य से वीथीशूला आ रही हो, तो महिलाओं के दीर्घकालीन व्याधि और उन्माद ग्रस्त रहने अथवा कभी कभार उनके आत्महत्या का प्रयास करने की संभावना रहती है।

11. आग्नेय खण्ड पर स्थित भवन का मुख्य द्वार दक्षिण मुखी हो और निर्माण कार्य पूर्व और दक्षिण की चारदीवारी से सटाकर किया गया, इसके साथ ही उस घर की सीढ़ियाँ भवन के पूर्वी भाग में स्थित हों, तो इस स्थिति में गृहस्वामी की अकाल मृत्यु की संभावना रहती है। या वह चिरकालिक व्याधि से पीड़ित रह सकता है।

12. यदि आग्नेय खण्ड पर निर्मित भवन दक्षिणोन्मुखी हो और उसका निर्माण पूर्वी और उत्तरी चारदीवारियों से सटाकर किया गया हो, साथ ही दक्षिण में भवन के अन्य खुले स्थान से अधिक छोड़ा गया हो और यदि दक्षिण में ढलान वाली पोर्टिको या प्रोजेक्शन (छज्जा) बना हो, तो भवन की इस प्रकार की स्थिति गृहस्वामिनी को वैधव्या एवं चिरकालीन व्याधि से ग्रस्त तथा संतान को घुमक्कड़ और आवारा बना सकती है।

13. आग्नेय खण्ड पर बने मकान में ईशान और वायव्य की अपेक्षा दक्षिणी आग्नेय नीचा होने पर भवन निवासी रोग एवं निर्धनता से पीड़ित हो सकते हैं।

14. भवन के नैऋत्य में गढ्ढा कुँआ या नीचापन सदैव भवन निवासियों को दीर्घकालिक रोग, तनाव और चिड़चिडापन प्रदान करते हैं।

15. उत्तरी वायव्य में आती वीथीशूला वायव्य खण्ड पर निर्मित मकान की स्त्रियों को स्वास्थ्य हानि एवं पुरुषों को अनेक व्यसनों का शिकार होने की संभावना बनाती है।

16. ईशान खण्ड पर निर्मित भवन का भूखण्ड सही होने पर भी यदि भवन के ईशान में कटाव अथवा अन्य कोई दोष हो, तो भी परिवार के बड़ों के रहते घर के दीपक के बुझने का कष्ट भोगना पड़ सकता है।

17. बीम या गर्डर के नीचे लम्बे समय तक सोते रहने से अनेक प्रकार के रोग की संभावना रहती हैं सिर के ऊपर बीम रहे तो मानसिक तनाव सिर दर्द, पेट के ऊपर पड़ती हो, तो उदार–विकार, पैर के ऊपर हो तो पैरों में सूजन होने की संभावना रहती है।

18. भूखण्ड का उत्तर और ईशान भूखण्ड के पूर्व, आग्नेय दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम तथा वायव्य से ऊँचे हो, तो भवन निवासी दीर्घ बीमारियों (अजीर्ण–क्षय) से ग्रसित हो जाते हैं।

19. मकान का वायव्य निर्माण द्वारा बन्द करने से अनके रोग वायुविकार, हड्डी रोग या मनोरोग होने की संभावना रहती है।

20. घर की खिड़कियों, दरवाजों के टूटे काँच तुरन्त ठीक करवा लेने उचित हैं। द्वार दरार युक्त होने पर गृहिणी के रक्त संबंधी रोग से ग्रस्त रहने की आशंका रहती है।

21. घर में विभिन्न प्रकार के काँटेदार वृक्ष–कैक्टस आदि रोग फैलाते हैं, इनके घर में रहने से रक्तचाप, हृदय रोग एवं किडनी की बीमारी होने की आंशका बनी रहती है। ऐसे वृक्ष और पौधे भी नहीं लगाएँ, जिनकी टहनी और पत्तियों से तोड़े जाने पर दूध टपकता हो, इनके रहने से गृह–निवासियों को फेफडे, किडनी अथवा मूत्ररोग हो सकते हैं।

22. घर में अनार का वृक्ष लगाना शुभ है किन्तु उस पर यदि फल न आए, तो वह बच्चों को बीमारी देने का कारण बन सकता है।

23. गूलर का वृक्ष दक्षिण में लगाना सही है, उत्तर में लगाने से नेत्र व्याधि होने का भय रहता है।

24. दूसरे के घर का प्रकाश अपने घर में नहीं आना चाहिए। इसी प्रकार अपने घर के आँगन या बाहर के आने–जाने के स्थान में से होकर पड़ोस के लोगों का आने–जाने का मार्ग होना सम्यक् नहीं है। दूसरे के घर में उपयोग में लिया गया गंदा जल अथवा वर्षा का जल अपने अहाते या सीमा में आना भी सही नहीं है, उपर्युक्त सभी स्थितियाँ रोग, शोक और तनावप्रदायी हैं।

❋❋❋

शेष पेज 12 **से आगे**.....

भविष्य हमारा अज्ञान है। इसलिए भविष्य है। भविष्य पूर्व रुप से अनिश्चित नहीं है। हमारा ज्ञान अनिश्चित है। ज्योतिष भविष्य में देखने की एक प्रक्रिया है। यह सत्य है कि मनुष्य ज्योतिष विद्या के सहारे से भविष्य में झाँकने की कोशिश कर रहा है। और कुछ हद तक सफल भी हुआ है। लेकिन सभी बातों का प्रमाण देना सम्भव नहीं है।

उपर्युक्त सभी बातें यही संकेत करती है कि विश्व में ज्योतिष का अस्तित्व निशिचित रुप से हैं लेकिन इसे सिद्ध करने में अनेकों कठिनाईयों आ रही है।

इतना होने पर भी कुछ लोग ज्योतिष का झूठ, मिथ्या, व अन्ध विश्वास मानते है। लेकिन सच तो यह है कि ज्योतिष कोई नया विज्ञान नहीं है। जिसे विकसित किया जाये। बल्कि यह विज्ञान तो पूरी तरह से विकसित था। विज्ञान भी आज इसे स्वीकार करता है। कि ज्योतिष का अस्तित्व पूर्णत है।

❋❋❋

❋❋❋

शेष पेज 06 से आगे.....

तुला– राशि सें नवमस्थ वृहस्पति अपने हाथ जगन्नाथ वाली स्थिति रहती है। अपने पराक्रम से जातक दुनिया बदलने की ताकत रखता है। अपनी मेंहनत लगन विद्या बुद्धि से सभी परेशानियों से निजात मिलेगी। वैभव–मान–प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। नये प्रोजेक्ट पर काम शुरू होगा। आलस्य से दूर रहे तो यह वर्ष आपका है।

वृश्चिक– राशि से अष्टम वृहस्पति परिवार के दायित्व में बढोंत्तरी करेगें। आय, लाभ, कोष में वृद्धि होगी। पुराने विवाद व तकलीफें दूर होगी। विदेश से अच्छे ऑफर मिलेंगें। मकान–वाहन का सुख मिलेगा। संतान की तरफ से चिंताएँ बनेगी। अफवाहों से दूर रहें।

धनु– राशि सें सप्तम वृहस्पति सतकर्म व सदविचार में लगाता है। आय में वृद्धि होगी। फँसा हुआ धन प्राप्त हेागा। सादा जीवन उच्च विचार की राह पर चलेंगें। छोटे भाई–बहिनों व मित्रों से पुनः सहयोग की प्राप्ति होगी। गृहस्थ जीवन में परेशानी आयेगी। रोगों से निजात मिलेगी। अपने अन्दर के जोश को बनायें रखें।

मकर– राशि सें छंठे वृहस्पति कर्मक्षेत्र में प्रगति के अवसर प्रदान करेगें। व्यर्थ के खर्चो पर नियन्त्रण होगें। स्थानान्तरण व यात्राओं का योग रहेगा। आपकी स्थायित्व सम्पदा जमा–पूँजी में बढोत्तरी होगी। संतान के साथ मिलकर कार्य करना ठीक रहता है। मुफ्त की वस्तुओं का लेने से बचें।

कुंभ– राशि से पंचम वृहस्पति आपके भाग्य के रास्ते खोलने वाले होगें। उन्नति के रास्ते धीरे–धीरे खुलते चलेंगें। आपको अपनी प्रतिभा का मौका दिखाने का अवसर प्राप्त होगा। आय कोष में वृद्धि होगी। राज्यकृपा,पिता,बड़े भाई का सहयोग प्राप्त होगा। शत्रु शांत होगें। कोई वस्तु मुफ्त में न लें।

मीन– राशि से चतुर्थ वृहस्पति कार्यक्षेत्र में प्रगति के रास्ते खोलेंगें। विदेश यात्रा के योग बनेंगें। जीवन–साथी से

संम्बंधों में मधुरता आयेगी। शोध कार्य पूर्ण होगें। संतान की शिक्षा–प्रगति पर खर्चे होगें। स्वयं के हाथो शुभ कार्यो का सम्पादन होगा। समय–समय पर वुर्जगों का आर्शीवाद लेते है।

द्वादश राशियें में वृहस्पति का गोचर व कुंडली में ग्रहों की स्थिति के अनुसार शुभ व अशुभ परिणाम प्राप्त होते है। उपायों द्वारा बृहस्पति के शुभ व अशुभ परिणामों में वृद्धि व कमी की जा सकती है।

1. गौ, ब्राहमण व गुरू की सेवा करें।
2. ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौ सः गुरूवे नमः मंत्र का जप करे।
3. केसर/हल्दी का तिलक लगायें।
4. कन्याओं का पूजन करें।
5. बुर्जगो का भुलकर भी अपमान न करें।

❋❋❋

शेष पेज 11 से आगे.....

कमजोर पड़ जाती है, जब कि विश्वास और मजबूत हो जाता है–इसलिए यह आवश्यक है कि हमारे नैतिक मूल्य श्रेष्ठ हो, ताकि हमारा विश्वास दृढ़ और मूल्यवान बना रहे। विश्वास करोगे, तो विश्वास पाओगे, अपने 'आदर्श' पर विश्वास ही आपको सफल बनाएगा।

छठ दम सील बिरति बहु करमा

सफलता कोई ऐसी चीज नहीं है, जो आपको राह चलते अनायास ही मिल जाए– इसके लिए बहुत सी तैयारी और कर्म करने पड़ते हैं। कठिन परिश्रम का कोई विकल्प हो ही नहीं सकता। **सफलता एक सफर है, मंजिल नहीं** कि जहाँ पहुँचकर हम रुक जाएँ। यह निरन्तर प्रक्रिया है। एक लक्ष्य पाने के बाद हमारे सामने दूसरा लक्ष्य खड़ा हो जाता है, जिसके लिए हमे सदैव तैयार रहना चाहिए, व्यस्तता ही सफलता की कुंजी है।

सातवे सम मोहि मय जग देखा

ज्यादातर लोग सफलता को तो पसन्द करते हैं, लेकिन जिनकी वजह से उन्हें सफलता मिली है, उनसे नफरत करते हैं,। दूसरे लोग उनके समकक्ष न बन जाएँ, इसलिए उनकी टाँग खीचने की कोशिश में लगे रहते हैं। ध्यान रखें–आपके सपोर्टर्स ने आपके लिए बहुत मेहनत की है। **आप हर व्यक्ति में सम भाव रखें।** योग्य सहयोगी को प्रोत्साहित करें। मधुर व्यवहार करें। कभी भी आलोचनाओं का शिकार बनाकर अपने लक्ष्य से न भटकें। सिद्धान्तों और विद्वानों बनकर का सम्मान ही सफलता दिला सकता हैं।

आठवँ यथा लाभ सन्तोषा

सफल व्यक्तियों में दोष ढूंढने के बजाय, हमें उनकी उन्नति से प्ररेणा लेनी चाहिए। सत्प्रयास से हमें जो प्राप्त हो, उससे ही सन्तोष करना चाहिए। सन्तोष महत्वाकांक्षा का विराम नहीं है वरन् लालच का विरोधी तत्व है। आज का सन्तोष–आने वाले कल का बीमा है। हमें अपने काम पर गर्व करना चाहिए। काम पर गर्व, अहंकार नहीं है। प्रभुकृपा से **जो प्राप्त है, वही पर्याप्त है।**

नवम सरल सब सन हीना

सरलता मनुष्य का ज्योतिर्मय स्वभाव है, जो उसके हृदय को तो आलोकित करता ही है, साथ ही उसके जीवन में छलहीन व्यवहार की सरिता प्रवाहित करता रहता है, प्रभु कृपा से जो मिल गया और जैसा मिल गया, उसके लिए ईश्वर को धन्यवाद देते रहना ही सरलता और सन्तुष्टि की पराकाष्ठा है। तरलता और सफलता साइकिल के दो पहिए हैं– जिसमें सरलता पीछे वाला और सफलता आगे वाला। **कथनी करनी में भेद नहीं** करना चाहिए।

जो दूसरों से थोड़ा ज्यादा काम करने को तैयार रहते हैं– सफलता उन्हीं के गले में जयमाला डालती है। सफलता प्राप्ति का यही आसान साधन है।

"सफलता और प्रसन्नता साथ-साथ चलती हैं। जो आप चाहते हैं उसे पाना सफलता है, और जो आप पाते हैं उसे चाहना प्रसन्नता है।"

❋❋❋

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।
500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262